संपादक का नोट

मैं आप सभी को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम से नमस्कार करती हूं। प्रभु हम में से हर एक को अपने प्यार के पंखों की छाया में ढंकें रहे।

रूत 2:12 ''यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों के तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे।'' उन लोगों के लिए जो प्रभु के पंखों के नीचे शरण लेते हैं, प्रभु अकेले ही आपके सभी दिल की इच्छाओं को पूरा करेंगे।

रूत का जीवन दुखित था क्योंकि उसने कम उम्र में उसने अपने पति को खो दिया था। उसे देखते हुए, बोअज़ ने कहा कि परमेश्वर तुम्हारे कार्यों के अनुसार तुम्हें सम्मान करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रभु के अनुमति के बिना तुम यहां नहीं आ सकती हों। तुम यहाँ प्रभु की इच्छा से आई हों। तुम यहाँ मेरे पंखों की छाया में नहीं, बल्कि इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की छाया में आई हों। जब रूत बीनने के लिए उठी, तो बोअज़ ने अपने जवानों को यह कहते हुए आज्ञा दी कि ''उसको पूलों के बीच बीच में भी बीनने दो, वरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ निकाल कर गिरा भी दिया करो, और उसके बीनने के लिए छोड़ दो।'' सो वह सांझ तक खेत में बीनती रही, और वह कोई एपा भर जौ निकला।

तब वह उसे उठा कर नगर में गई, और उसकी सास ने उसका बीना हुआ देखा। और जो कुछ उसने तृप्त होकर बचाया था उसको उसने निकाल कर अपनी सास को दिया। उसकी सास ने उस से पूछा, ''आज तू कहां बीनती? और कहां काम करती थी? धन्य वह हो जिसने तेरी सुधि ली है,'' तब उसने अपनी सास को बता दिया, कि मैंने किस के पास काम किया, और कहा, कि ''जिस पुरूष के पास मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज है।'' तब नाओमी ने अपनी बहू से कहा, ''वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उसने न तो जीवित पर से और न मरे हुओं पर से अपनी करूणा हटाई।'' फिर नाओमी ने उस से कहा, ''वह पुरूष तो हमारा कुटुम्बी है, वरन उन में से है जिन को हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है।''

जैसे की बोअज एक दयालु व्यक्ति था और उसने उसे और अधिक इकट्ठा करने में मदद की और रूत तो उस स्थिति में भी एक अच्छी लड़की होने के नाते उसने कुछ भी गलत नहीं किया। वह अपने रोज के भोजन की उम्मीद में गई थी लेकिन प्रभु ने उसे उससे अधिक दिया जो उसने अपेक्षा की थी। रूत 3:11 ''इसलिए अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ से करूंगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री है।''

प्रभु आपको आपकी उम्मीद से भी ज़्यादा आशीर्वाद देने के लिए आपको अपने चरित्रों को बदलना होगा और धार्मिक बनना होगा। हमारे सभी बुरे गुणों जैसे कि क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, जलन और हमारे पापी जीवन को पीछे छोड़ देना चाहिए। रूत ने आशीर्वाद पाया क्योंकि पूरा गांव जानता था कि वह एक गुणवान महिला थी। रूत 4:13 ''तब बोअज ने रूत को ब्याह लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की दया से उसको गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ।''

यह आशीर्वाद उसे इसलिए मिला क्योंकि वह परमेश्वर के पंखों के छाया में आई थी। हमारा प्रभु तोड़ने वाला नहीं बल्कि बनाने वाला है; उनके हाथों से आप उत्तम आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

रूत की शादी के दिन सभी गाँव के बुजुर्गों ने साक्षी देते हुए कहा रूत 4:11, 12 ''11 तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्होंने और वृद्ध लोगों ने कहा, हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा इस्राएल के घराने की दो उपजानेवाली राहेल और लिआः के समान करे। और तू एप्राता में वीरता करे, और बेतलेहेम में तेरा बड़ा नाम हो; 12 और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे उसके कारण से तेरा घराना पेरेस का सा हो जाए, जो तामार से यहूदा के द्वारा उत्पन्न हुआ।''

वही परमेश्वर हमारे जीवन में वैसा ही आशीर्वाद दे सकते है, अगर हम हर दिन कोशिश करेंगे तो अपने जीवन में इन गुणों को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभु आप सभी को आशीर्वाद दें, जब तक हम फिर से मिलेंगे।

प्रभु यीशु की सेवा में,

पास्टर सरोजा म।

प्रभु हमें महिमा के पात्र के रूप में बना सकते हैं।

रोमियों 9: 23 ''और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रकट करने की इच्छा की'' प्रभु ने बादलों के माध्यम से अपनी महिमा दिखायी है, उसके बाद मूसा द्वारा निर्मित तम्बू में प्रभु की महिमा देखी गई, बाद में सुलैमान द्वारा निर्मित पवित्र मंदिर पर प्रभु की महिमा स्थापित की गई। आखिर में प्रभु ने घोषणा की कि मनुष्य द्वारा बनाए गए मंदिर में उनकी महिमा नहीं होगी, बल्कि प्रभु ने अपनी महिमा के साथ उनके एकमात्र बहुमूल्य पुत्र यीशु मसीह को भेजने का फैसला किया। इस प्रकार यीशु मसीह को पूरे मानव जाति के लिए प्रभु को महिमा देने के लिए कैलवरी के क्रूस पर मरना पड़ा। यीशु मसीह ने क्रूस पर अपना जीवन त्यागने के बाद ही, इस दुनिया में महिमा को दिखाया गया था। इस प्रकार, प्रभु ने घोषित किया कि ''हम उनके पवित्र मंदिर हैं और वह हम में से प्रत्येक के भीतर रहते है''। आज, हमें यहां और वहां प्रभु की महिमा की खोज करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें अपने भीतर देखना चाहिए और उसे खोजना चाहिए। यीशु मसीह, उनके पुत्र के माध्यम से भेजी गई महिमा, हम में से प्रत्येक के भीतर है। आइए फिर से पढ़ते है रोमियों 9: 23 ''और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रकट करने की इच्छा की'' इस प्रकार, हम दया के पात्र हैं जिसके माध्यम से प्रभु की महिमा फैलती है, क्योंकि उन्होंने हमें इस लिए तैयार किया है। यशायाह 64: 8 ''तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी है, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं।'' इस्राएली परमेश्वर से प्रार्थना करते थे ''हम मिट्टी हैं और आप कुम्हार हैं, हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं''। पौलुस इस बारे में लिखता है रोमियों 9: 21–23 ''21 क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लौंदे मे से, एक बरतन आदर के लिए, और दूसरे को अनादर के लिए बनाए? तो इस में कौन सी अचम्भे की बात है? 22 कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रकट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिए तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही। 23 और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रकट करने की इच्छा की'' प्रभु का हाथ न केवल आशीर्वाद और प्रेम का हाथ है,

बल्कि दया का हाथ भी है और इसके कारण हम सभी के लिए दया का पात्र भी बन सकते हैं।

इफिसियों 2: 8 ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।'' हम अकेले उनके दया और कृपा से पात्र बनाए गए हैं। शुरुआत से, हमारा प्रभु दया के साथ हमारे पात्र को भरने के लिए तैयार है, वह कृपापूर्ण और दयालु है। इस प्रकार हमें अपना पवित्र मंदिर बना दिया है, कि हम अपने जीवन को बर्बाद नहीं करे बल्कि अधिक अर्थपूर्ण और योग्य बनाए। प्रभु ने हमें दया का अपना पात्र क्यों बनाया? ताकि हम अन्य लोगों का जीवन भर सकें न की अपने ज्ञान और ताकत से बल्कि प्रभु की कृपा से। क्योंकि हमारा प्रभु कृपालु और दयालु है, इस प्रकार वह हमें सभी मानव जाति के लिए दया के अपने पात्र के रूप में भर सकता है। आइए हम पढ़ते है कुलुस्सियों 1: 27 ''जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।'' प्रभु जो महिमा और दया में समृद्ध है, ज्योति के परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को भरकर और हमें दया के साथ अपना पात्र बनाकर अद्भुत काम किए है। कल्पना कीजिए, हम अपने भीतर उनकी महिमा की समृद्धि के साथ आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। यीशु ने कहा है यूहन्ना 17: 22 ''और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।'' हमारे दयालु प्रभु, यीशु मसीह, जिन्हें इस दुनिया में प्रभु की दया, अनुग्रह और महिमा से भरकर भेजा गया था, उन्होंने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन त्याग दिया, इस प्रकार उपरोक्त वचन में हमसे बात करते है। तो अब हम जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा अपनी महिमा हमारे लिए क्यों दी है, उन्होंने हमें अपना पवित्र मंदिर और दया का एक पात्र बनाया है कि हमें अपना जीवन उस तरह से नहीं जीना चाहिए जैसे हम चाहते है, बल्कि हम भी 'एक' हैं, जैसे यीशु और परमेश्वर पिता 'एक' हैं। आइए हम शास्त्रों में से पढ़ते है मत्ती 19 की कैसे यीशु एक धनी युवा शासक को सलाह देता है, मत्ती 19: 16–22 ''16 और देखो, एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा, हे गुरू; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं? 17 उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है; पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। 18 उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं? यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना। 19 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। 20 उस जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात की घटी है? 21 यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले। 22 परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास

होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।'' यह धनी आदमी मूसा द्वारा दिए गए सभी आदेशों का पालन करता था और कानून के अनुसार अपना जीवन जीता था। लेकिन उसकी समृद्ध संपत्ति उसे अनंत जीवन नहीं दे सकी। उसके भीतर एक कमी और खालीपन था। इस प्रकार, वह यीशु के पास दौड़ता हुआ आता है और उससे पूछता है ''इन सभी चीजों को मैंने अपने युवापन से रखा है। अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे अभी भी क्या कमी है?'' ''यीशु जवाब देते है'' यदि तुम परिपूर्ण होना चाहते हो, तो अपने पास जो कुछ भी है उसे बेच दो और गरीबों को दे दो और तुम्हारे पास स्वर्ग में खजाना होगा और आओ और मेरे पीछे हो लो।'' लेकिन जब वह यह सुनता है तो उदास हो जाता है, और बड़े दुःख के साथ वह जवान आदमी लौट जाता है, क्योंकि उसके पास बहुत सारी संपत्ति थी। हमें भी इस मार्ग के माध्यम से अनन्त जीवन का रहस्य पता होना चाहिए। हमें क्या सही बना सकता है? प्रभु हमें इस दुनिया में उनके दया के पात्र कैसे बना सकते हैं? केवल हमारे 'आज्ञाकारी' से और न की हमारे बलिदान से। हां, मूसा द्वारा कानून दिया गया था, और धनी युवा शासक ने उन सभी कानूनों को रखा था और आज्ञाओं के अनुसार अपने जीवन में चलता था। लेकिन वह इसके द्वारा परिपूर्ण नहीं हो सका, इस प्रकार अनन्त जीवन का उपहार खो दिया !

हम जानते हैं कि कैसे यीशु की सेवा इस धरती पर थी, जिसने उन्हें प्यार किया वह उन्हें प्यार करता था। किसको सुधार की आवश्यकता थी, उन्होंने उन्हें सुधारा और क्रोदित भी हुए, जिनको आशीर्वाद की आवश्यकता थी उन्हें आशीर्वाद दिया गया। इन सभी चीजों में यीशु ने अपनी इच्छा के अनुसार नहीं किया, बल्कि उन्होंने पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार किया। इस प्रकार, यीशु ने पिता परमेश्वर से कहा यूहन्ना 17: 22 ''और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।'' यीशु यहाँ कहते हैं ''हम एक थे, तो वे एक होंगे''। निश्चित रूप से, जो लोग प्रभु की महिमा प्राप्त कर चुके हैं वे सांसारिक तरीकों के अनुसार अपना जीवन नहीं जी सकते हैं। उन्हें खुद को इस दुनिया के अंधकार से अलग होना ही होगा। जब यीशु ने उसकी सारी संपत्ति बेचने के लिए धनी युवा शासक से कहा, तो वह उसकी आज्ञाकारिता की जांच कर रहा था, न कि उसके बलिदान को। इस प्रकार, याद रखें, हमारे जीवन में भी जब हम प्रभु के लिए 'आज्ञाकारी' होते हैं, हम सफल होंगे। प्रभु हमारे 'बलिदान' नहीं चाहते हैं, हम अकेले हमारे 'आज्ञाकारी' के साथ प्रभु में फलदायी बन सकते हैं। यीशु युवा व्यक्ति के दिल की जांच कर रहे थे, अगर वह अपनी संपत्ति को प्रभु के मुकाबले ज्यादा प्यार करता था, तो वह प्रभु की परीक्षा में विफल रहा ! कल्पना कीजिए कि अगर हमारे गौरवशाली और धनी प्रभु ने हमारे भीतर रहने का फैसला किया है तो हम कितने धन्य हैं ! मनुष्य सोचते हैं, इन शास्त्रों के अनुसार दुनिया में अपने जीवन को जीने के लिए यह कैसे संभव है? लेकिन, याद रखें कि प्रभु की कृपा के साथ सबकुछ संभव है।

हम यह भी जानते हैं, उपर्युक्त शास्त्र के अंत में पतरस ने यीशु से पूछा ''देख, हमने सब कुछ छोड़ दिया है और आपके पीछे चल पड़े है, इसलिए हमारे पास क्या होगा?''

यीशु ने जवाब दिया मत्ती 19: 28 ''यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।'' याद रखें, जब हमने अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा के साथ प्रभु का पालन किया है, तो वह कभी भी हमें त्याग नहीं देगा। हम शास्त्रों से एक और उदाहरण के बारे में भी जानते हैं, एक समय आया जब लोग यीशु और उसके शिष्यों से चुंगी इकट्ठा करने के लिए आए, उनके पास कुछ भी नहीं था। यीशु अपने शिष्यों से कहता है ''यद्यपि हमें करों का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इस दुनिया के कानून के अनुसार हमें करों का भुगतान करना होगा। समुद्र में जाओ और अपने मछली पकड़ने के कांटे को निचे करों, वहां तुम उस मछली के मुंह में एक सिक्का पाओगे। इसके साथ उन्हें तुम्हारे और मेरे कर का भुगतान करो''। क्या यीशु कभी भी हमसे कुछ ले सकता है, और न ही वह हमारे जीवन में कोई कमी करेगा? कभी नहीं ! लेकिन, हम केवल इंसानों के रूप में, हमारे परिवार के प्यार और कर्तव्य के कारण, समाज के प्यार के लिए और दुनिया भर की चीजों में, हम अपने लिए प्रभु द्वारा दी गई अनन्त जीवन के उपहार को खो देते हैं। आइए हम इस पर विचार करें और हमें इन चीजों को हल्के ढंग से हमारे जीवन में नहीं लेना चाहिए ? याद रखें कि प्रभु हमारी 'आज्ञाकारिता' को देखते हैं, न कि हमारे 'बलिदान' को, वह परमेश्वर है जो हम से कुछ नहीं लेता ताकि हम इस दुनिया में गरीब बने बल्कि हमें देता है।

2 कुरिन्थियों 4: 7–11 ''7 परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। 8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। 9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। 10 हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रकट हो। 11 क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रकट हो।'' मनुष्य हर तरफ से परेशान रहता है, कभी–कभी हमें अपने दुश्मन के हाथों फुटबॉल बना दिया जाता है। हमारे परीक्षणों और कष्टों में हम परेशान और घबराए हुए हो सकते हैं, लेकिन निराशा में नहीं होना चाहिए। हमें सताया जा सकता है लेकिन त्याग नहीं किया जा सकता है, हमें नीचे गिराया जा सकता हैं लेकिन नष्ट नहीं किया जा सकता हैं। दोबारा, शास्त्रों से कहानियों को याद करते हैं, सबसे पहले एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसने यरूशलेम छोड़कर यरीहो की यात्रा की था। हम जानते हैं

कि कैसे दुश्मनों ने उस पर हमला किया और उसके सभी चीजों को लूट लिया, फिर उसे सड़क पर मरने के लिए नग्न और लहूलुहान छोड़ दिया था। दूसरी कहानी अय्यूब की है, हम सभी उसकी विपत्ति को जानते हैं, जब दुश्मन ने उन पर हमला किया, उसकी हालत भी वही थी, उसने परिवार और धन को खो दिया और अपने शरीर में बीमारियों से पीड़ित हो गया था। उपर्युक्त उदाहरणों से, हमें याद रखना चाहिए, दुश्मन जानता है कि हम दयालु के पात्र हैं जो हमारे भीतर प्रभु की महिमा है, इस प्रकार वह इस पवित्र पात्र को नष्ट करने की कोशिश करेगा। शत्रु महिमा को नष्ट करने के लिए उन तरीकों से काम करेगा जो हम अपने भीतर नहीं देख सकते हैं या समझ नहीं सकते हैं। लेकिन हमें अपने जीवन में इस दुष्ट योजना से सावधान रहना चाहिए। उदाहरण के लिए जब एक कुत्ते को पूरे नारियल को दिया जाता है, तो वह नारियल को नष्ट नहीं कर सकता है, क्योंकि उसके आसपास की कठोर सुरक्षा के कारण। जबकि आधे टूटे हुए नारियल को कुत्ते द्वारा कई टुकड़ों में फेंक दिया जा सकता है। इसी प्रकार, जब हमारे पास हमारे चारों ओर प्रभु की सुरक्षा है, तो कोई दुश्मन हमें छू नहीं सकता है। इस प्रकार हमें प्रभु के द्वारा बनाई गई दया के एक पात्र के रूप में जारी रहना चाहिए, जो हमारे भीतर उसकी महिमा से भरा हुआ है। तो हम अपने जीवन में प्रभु की कृपा खोने के लिए मूर्ख न बनें। आइए फिर से पढ़ते है 2 कुरिन्थियों 4: 7–11 ''7 परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। 8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। 9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। 10 हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रकट हो। 11 क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रकट हो।''

1 कुरिंथियों 6: 19 ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?'' यीशु इस वचन में बहुत स्पष्ट है। हमारे शरीर क्यों अशुद्ध हैं, हमने क्यों पाप किया है, हम क्यों बीमार हैं, हमारे विचार अपवित्र क्यों हैं? क्यों ? क्यों ? क्यों ? क्योंकि हमने अभी भी पूरी तरह से प्रभु के हाथों में अपने आप को नहीं दिया है कि वह हमें दया का अपना पात्र बना सके और हमें उसकी महिमा से भर सके। यही कारण है कि हमेशा हमारे जीवन में कमी है। वचन 20 कहता हैं ''क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' हम यह भी जानते हैं कि कैसे यीशु ने लौदीकिया के अपने चर्च के बारे में बात की थी प्रकाशितवाक्य 3: 20–22 ''20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ। 21 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा

मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। 22 जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'' हां, आज भी, यीशु 'हमारे परमेश्वर के वचन' के माध्यम से हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे है। ताकि हम इस दुनिया के ऊपर जय पा सकें और प्रभु हमें उसके सिंहासन पर उसके साथ बैठने के लिए अनुमति दे। यह अनंत जीवन का एकमात्र तरीका है। जब हम परमेश्वर के साथ एकजुट होते हैं, हम बलवंत, बुद्धिमान, निडर बन जाते हैं और दुनिया से लड़ने के लिए सुसज्जित होते हैं।

लेकिन हमें याद रखना चाहिए, प्रभु खड़े हैं और हमारे दरवाजे पर दस्तक देते हैं, इसलिए दरवाजे की कड़ी भीतर से है इसलिए हमें इसे भीतर से खोलने की ज़रूरत है ताकि प्रभु हमारे जीवन में प्रवेश कर सकें। वह हमारे जीवन में जबरदस्ती से प्रवेश करने के लिए हमारे दुश्मन नहीं हैं, बल्कि वह एक सभ्य और धैर्यवान प्रभु है और हमें उसका स्वागत करने के लिए इंतजार करना चाहिए और इस प्रकार प्रभु के लिए हमें अपने दरवाजे को अपनी मर्जी से खोलना चाहिए। आइए सुनें कि आत्मा कलीसिया से क्या कहता है, जब हम उसकी आवाज सुनते हैं तो हमें दरवाजे को खोलना चाहिए। एक बार, शूलामी ने भी प्रभु को अपने दरवाजों पर दस्तक देने के लिए छोड़ दिया। आइए पढ़ते है श्रेष्ठगीत 5: 2 ''मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लिए द्वार खोल; क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दोंसे भीगी हैं।'' हमारे प्रभु, प्रेमपूर्ण, दयालु, कृपालु, अनुग्रहपूर्ण, शूलामी के दरवाजे के बाहर खड़े होकर खटखटा रहे थे, उन्होंने उसे ''मेरी प्रिय, मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल'' संबोधित किया। हां, आज भी, परमेश्वर वही करता है और हमारे दरवाजे पर दस्तक देता है, हमारे लिए इसे खोलने के लिए धैर्यपूर्वक इंतजार कर रहे है, ताकि वह हमारे जीवन में आ सके और उसे अपनी महिमा से भर सके और हमें सभी मानव जाति के लिए दया का पात्र बना सके। जब प्रभु हमें उसका पात्र बनाते हैं, तो हमारे शरीर एक जैसे नहीं होते हैं, हमारी सारी बीमारी, दर्द, दुःख, भय, पाप और कमी पन उसके द्वारा हटा दी जाएगी। इस प्रकार हम इस दुनिया के अंधेरे से अलग होने के लिए महिमा के उनके पात्र बन जाते हैं, इस प्रकार वह 'हमारे जीवन में प्रकाश' लाता है।

हमें प्रभु के आने और हमारे जीवन पर शासन करने का मार्ग बनाना चाहिए। 1 यूहन्ना 4: 4 ''हे बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।'' हमारा दुश्मन जो इस संसार पर शासन करता है वह ताकतवर है, लेकिन याद रखें कि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, इस प्रकार जो इस संसार में रहता है वह हमारे प्रभु की तुलना में 'बढ़कर' नहीं है। जब प्रभु हमारे जीवन में प्रवेश करते हैं तो यह केवल हमारे जीवन में आशीर्वाद की शुरुआत है। इस प्रकार, हम अपने जीवन में

भी अधिक से अधिक महिमा प्राप्त कर सकते हैं। आइए पढ़ते हैं भजन संहिता 24: 8–10 ''8 वह प्रतापी राजा कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! 9 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ! 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।'' यह महिमा का राजा कौन है? वह यहोवा परमेश्वर शक्तिशाली और पराक्रमी है, यहोवा युद्ध में शक्तिशाली है। याद रखें मानव जाति की शुरुआत से, प्रभु बादल, तम्बू, पवित्र मंदिर आदि के रूप में उनके लोगों में थे, लेकिन आज, प्रभु हमारे भीतर रहते है, इस प्रकार हमारी हर लड़ाई उसके द्वारा जीती जाती है। आइए फिर से पढ़ें – ''8 वह प्रतापी राजा कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! 9 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ! 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।'' उदाहरण के लिए, यहां एक कहानी है, एक आदमी राजा के पास आता है और उसे कहता है कि उसे खेती करना पसंद है, अगर उसे 5 एकड़ जमीन दी जाए, तो वह खेती करेगा और अपने परिवार को खिलाने में सक्षम होगा। राजा इस आदमी के विचारों की सराहना करता है कि वह खुद के लिए और उसके परिवार के लिए श्रम करना चाहता था। इस प्रकार वह अपने मंत्री को इस आदमी को 10 एकड़ भूमि देने के लिए कहता है। कुछ दिनों के बाद, एक और आदमी राजा के पास रोकर आता है ''मेरे पास 3 बेटियां हैं और उनकी शादी करने की ज़रूरत है, इसके लिए पैसे की आवश्यकता है''। तो फिर, राजा ने अपने मंत्री से उनकी 3 बेटियों के लिए 3 लाख रूपए देने के लिए कहा। आदमी खुशी से पैसे के साथ चला गया। एक और आदमी राजा के पास आता है, इस बार अनुरोध अनोखा था, उसने नाश्ते के लिए राजा को अपने घर में आमंत्रित किया। राजा इस अनुरोध से व्याकुल था, उसने तुरंत अपने मंत्री से मुलाकात की और उसे इस आदमी को एक तारीख देने के लिए कहा और कहा, ''हम सभी जाएंगे और उसके परिवार के साथ नाश्ता करेंगे''। अगले दिन, मंत्री इस गांव में सड़क और बुनियादी ढांचे के मरम्मत का कार्य शुरू करता हैं, क्योंकि राजा जल्द ही इस गांव का दौरा करने वाला था। उन्होंने इस आदमी के घर की मरम्मत की और एक छोटे से झोपड़ी से वह इसे एक अच्छा छोटा बंगला बनाता है ताकि राजा आराम से इस परिवार के साथ नाश्ते का आनंद उठा सके। पूरे गांव को राजा के मंत्रियों ने आश्चर्यजनक रूप से बदल दिया और राजा की यात्रा के लिए तैयार किया। इसी तरह का अनुमान, हम अपने जीवन पर लागू कर सकते हैं, जब प्रभु एक बार हम से मुलाक़ात कर लेते हैं, तो वह हमारे लिए अपने सहायक को छोड़ देता है और इस प्रकार हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल देता है। प्रभु केवल एक बार हमारे जीवन में आना चाहते है, ताकि वह दयालुता के हमारे पात्र को अपनी महिमा से भर सके और हमें पूरी तरह से बदल सके। याद रखें, जब हम अपने अच्छे प्रभु को एक बार अपने जीवन में आमंत्रित करते हैं, तो

प्रभु इसे पूरी तरह से बदलने के लिए तैयार होंगे ! हालेलुयाह ! हालेलुयाह ! एक बार जब वह हमारे जीवन में आ जाते है तो प्रभु हमें कभी अनाथ नहीं छोड़ेंगे। चलो पढ़ते हैं यूहन्ना 14: 16 ''और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।'' वह हमारे भीतर उनके सहायक को रखेंगे ताकि वह हमेशा हमारे साथ रहे। हमें हमेशा प्रभु की इच्छा पूरी करनी चाहिए और उसके पुकार के लिए आज्ञाकारी होना चाहिए। जब तक कि प्रभु हमारे पात्र को अपनी दया के साथ भरते नहीं है, तब तक हमारे जीवन व्यर्थ होते हैं। जैसा कि भजन संहिता लिखनेवाला कहता हैं भजन संहिता 24: 7 ''हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो। हे सनातन के द्वारों, ऊंचे हो जाओ। क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।'' हमें महिमा के राजा को जल्द ही अपने जीवन में प्रवेश करने देना चाहिए। यह 'वचन' की दृढ़ता है जो इस आशीर्वाद को हमारे जीवन में लाएगा। क्योंकि शुरुआत में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। आइए हम पढ़ते है यूहन्ना 1: 14 ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।'' जो महिमा हमें मिली है वह यीशु मसीह से है, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपने एकमात्र पुत्र यीशु मसीह को मानव जाति के लिए दे दिया। उसके माध्यम से, हम प्रभु की महिमा से भरे हुए हैं और इस प्रकार मानव जाति के लिए दया का पात्र बन जाते हैं। याद रखें, आज के संदेश की कुंजी यह है कि ताला हमारे भीतर है, हमें अंदर से ताला खोलने की जरूरत है ताकि प्रभु हमारे जीवन में प्रवेश कर सकें और शासन कर सकें।

यह संदेश सभी को आशीर्वाद दे !

पास्टर सरोजा म.